BGVS
पूछ पाछ
का खेल
कनिका नायर

इस पुस्तक का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा बच्चों में रचनात्मकता और पठन–पाठन संस्कृति विकसित करने के लिए 'बाल पुस्तकमाला' के तहत किया गया है।

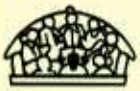

पूछ पाछ का खेल	**Puch Pach Ka Khel**
कथा और चित्रांकन कनिका नायर	**Story and Illustration** Kanika Nair
पुस्तकमाला संपादक मनोज कुलकर्णी	**Series Editor** Manoj Kulkarni
प्रथम संस्करण जनवरी, 2012	**First Edition** January, 2012
सहयोग राशि 90 रुपये	**Contributory Price** Rs. 90
मुद्रण सन शाइन ऑफसेट नई दिल्ली – 110 018	**Printing** Sun Shine Offset New Delhi - 110 018

ISBN:- 978-93-81811-01-6

© भारत ज्ञान विज्ञान समिति

ज्ञान विज्ञान प्रकाशन
Publication and Distribution:
Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773
Email : bgvsdelhi@gmail.com. Website : www.bgvs.org

पूछ पाछ का खेल

कहानी और रेखांकनः कनिका नायर

इस पुस्तक को तैयार करने में रामपुरा चौकावाला, राजस्थान के स्कूली बच्चों, मेरी प्राध्यापिका शिल्पी बरमन और पुस्तक की कथा में श्री गोपालकृष्णन चुनक्कर के लेखन से बहुत मदद मिली। उनका आभार।

एक शाम को मुन्नी, गुन्नू, किशन, मोहित और उसकी छोटी बहन लज्जो खूब खेले। फिर थककर आंगन में बैठे। सब की नज़र गोल चांद पर पड़ी। वे बोले चंदामामा तो आज...

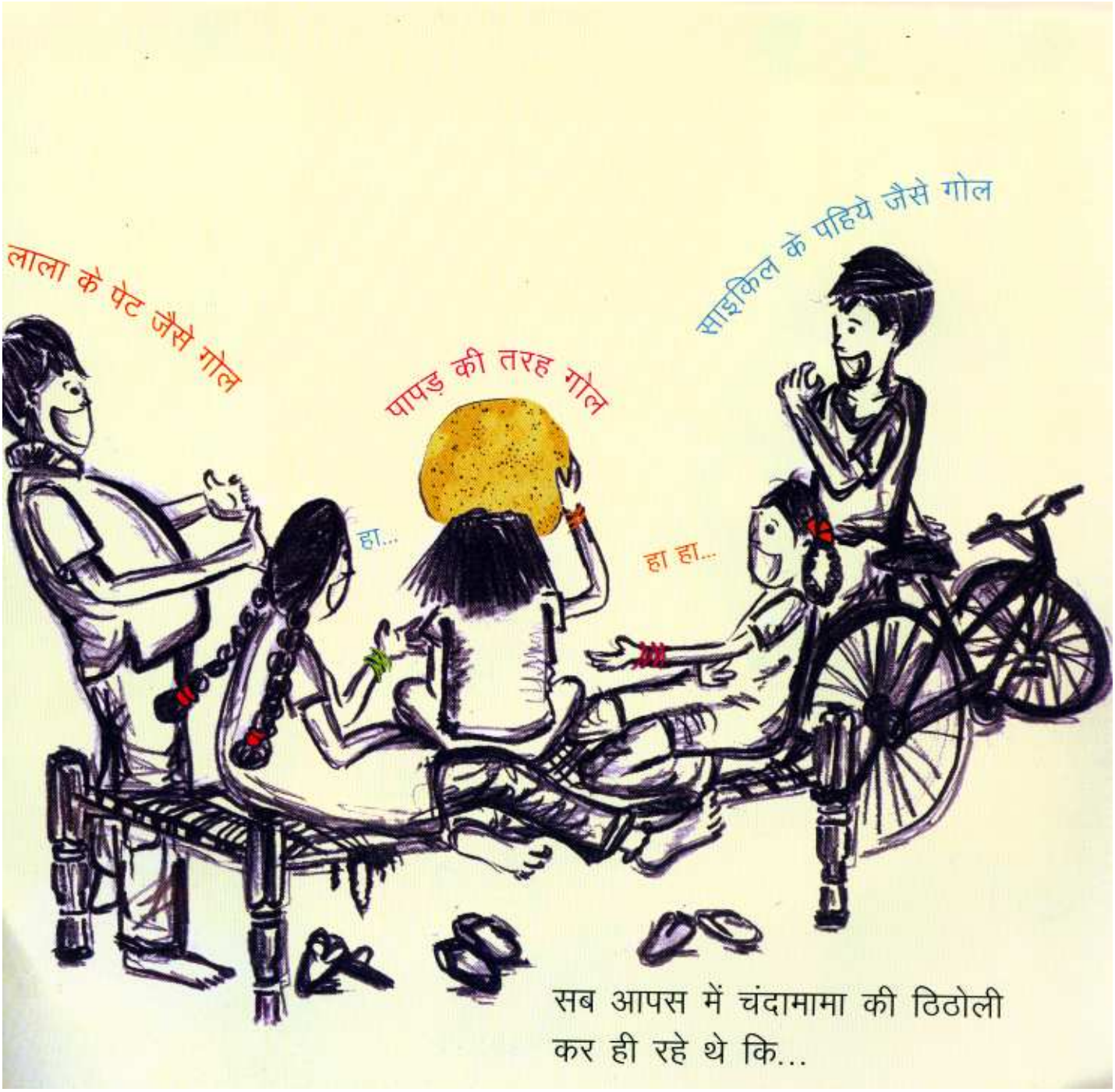

सब आपस में चंदामामा की ठिठोली
कर ही रहे थे कि...

अचानक आसमान से जोर की आवाज़ आई

धत्त्!
तुम तो मेरे
बारे में कुछ
भी नहीं
जानते

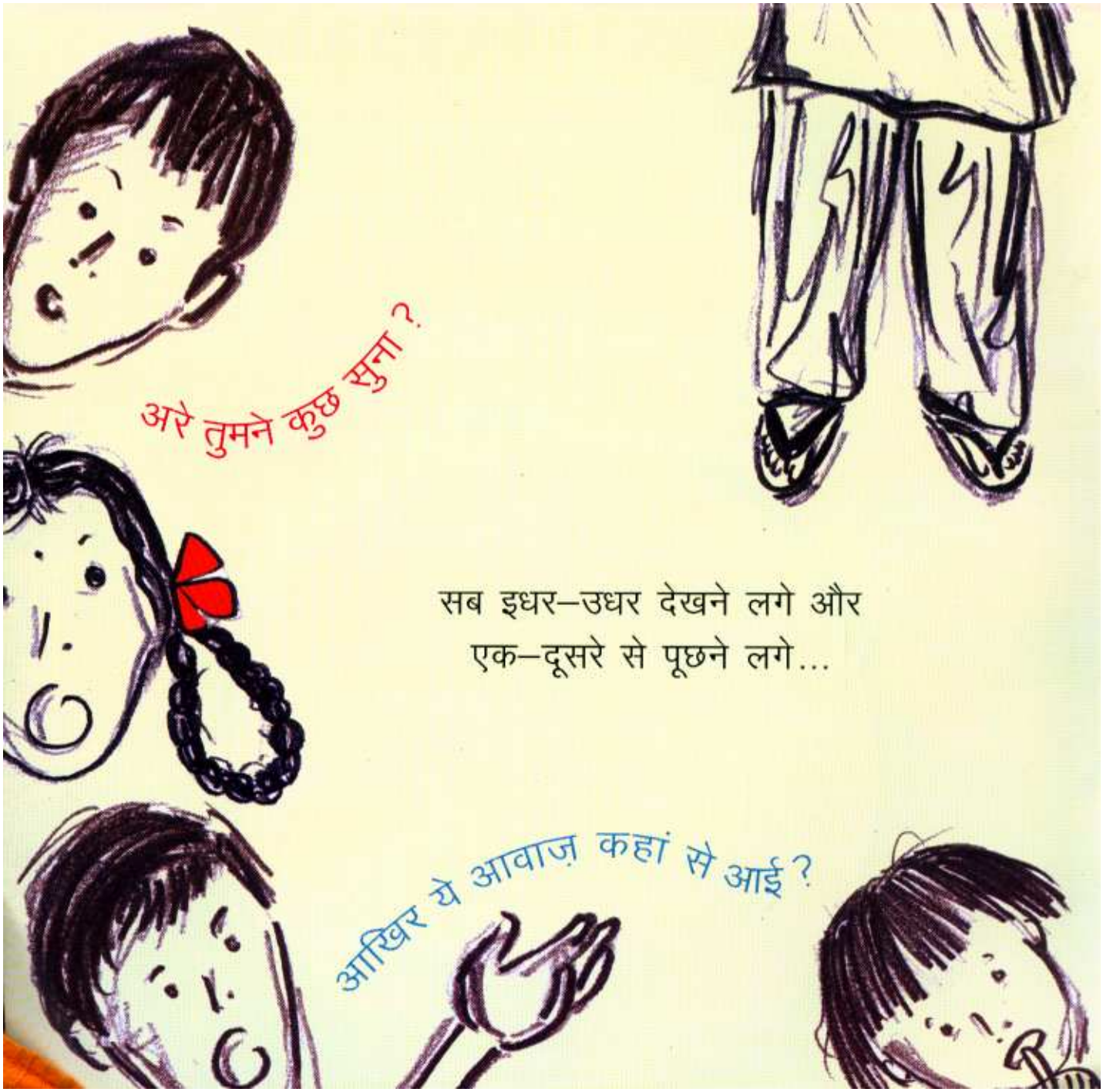
अरे तुमने कुछ सुना ?
सब इधर–उधर देखने लगे और
एक–दूसरे से पूछने लगे...
आखिर ये आवाज़ कहां से आई ?

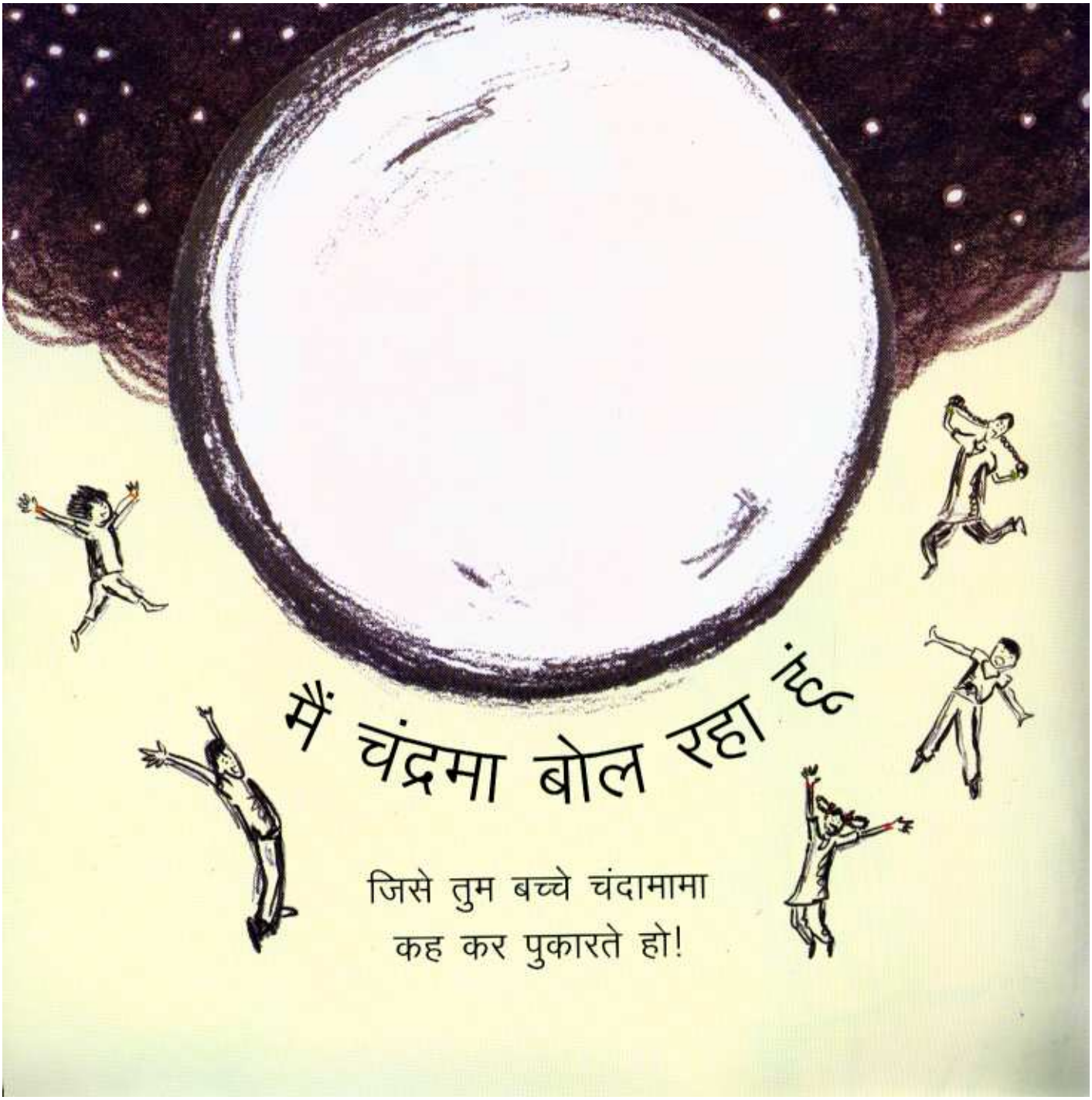
मैं चंद्रमा बोल रहा हूँ
जिसे तुम बच्चे चंदामामा
कह कर पुकारते हो!

मैं बहुत देर से तुम सब की बातचीत सुन रहा हूं। पर बड़े आश्चर्य की बात है कि तुम सब मेरे बारे में कुछ जानते ही नहीं।

नहीं–नहीं चंदामामा...

हम आपके बारे में बहुत कुछ जानते हैं।

दादी और मां आपकी पूजा करतीं हैं।

मां की लोरी में आप होते हो।

मां तो मुझे चांद का टुकड़ा कह कर बुलाती है !

मुझे भी !

और मुझे भी !

अरे यह भी कुछ जानना हुआ?
चलो बताओ मैं कितना बड़ा हूं?
तुम्हारी पृथ्वी से कितनी दूर हूं?
आप तो आज हमें सूरज चाचा
जितने ही बड़े लग रहे हैं।
और दूरी?
शायद गुन्नू के घर से उसकी
बुआ जी के घर तक होगी। बुआ
जी के घर पहुंचने में रेल से दो
दिन लगते हैं।
कूं कूं कूं छुक छुक छुक छुक

यह केवल तुम्हारी सोच है जो सही नहीं है।

मैं तुम्हारे सूरज चाचा से बहुत छोटा हूं। मैं पृथ्वी से भी छोटा हूं। पृथ्वी की सतह बहुत बड़ी है। यहां तक कि उस पर मेरे जैसे लगभग 50 चंद्रमा आ सकते हैं।

मैं पृथ्वी की ही तरह गोल हूं और पृथ्वी के सबसे ज्यादा नज़दीक भी। मैं पृथ्वी से 3,84,000 किलोमीटर दूर हूं।

पता है बच्चों, पृथ्वी और मैं एक ही परिवार का हिस्सा है।

पृथ्वी अपनी कक्षा में घूमती है और सूर्य के चारों ओर चक्कर भी लगाती है। बुध, शुक्र, बृहस्पति एवं शनि आदि पृथ्वी के समान ही ग्रह हैं। जो सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते हैं।

छोटे आकाशीय पिंड, जो ग्रहों के चारों ओर घूमते हैं, वे सैटेलाइट, उपग्रह कहलाते हैं। इस प्रकार हमारे परिवार में सूर्य, पृथ्वी, अन्य ग्रह और मैं यानि कि तुम्हारे चंदामामा जैसे उपग्रह शामिल हैं।

इसी बड़े परिवार का नाम है **'सौरमंडल'**

ओहो! सच में?

हम तो सोच रहे थे कि हम आपको चंदामामा कहते हैं इसलिए हम सब रिश्तेदार हुए।

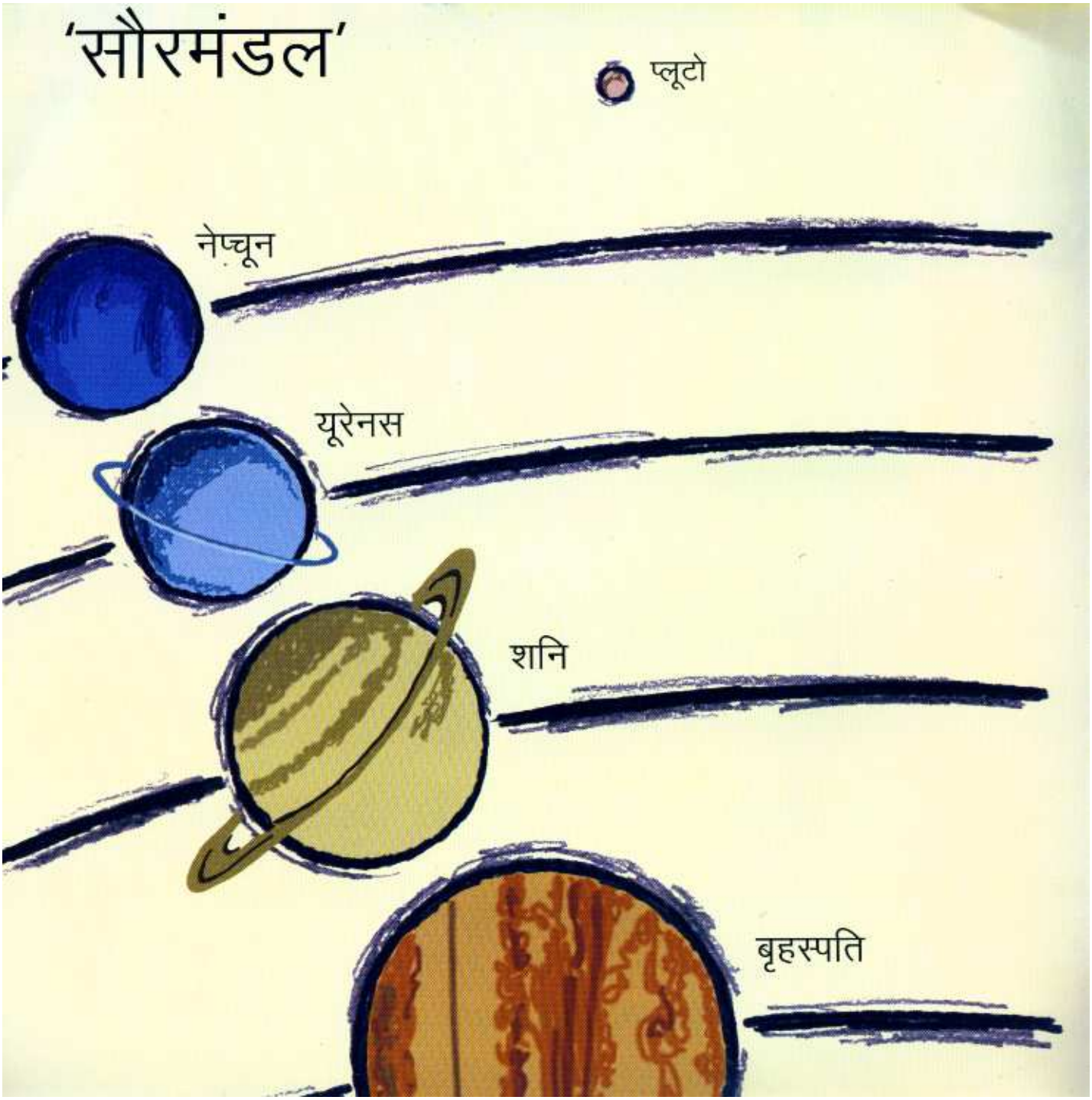
'सौरमंडल'
प्लूटो
नेप्चून
यूरेनस
शनि
बृहस्पति

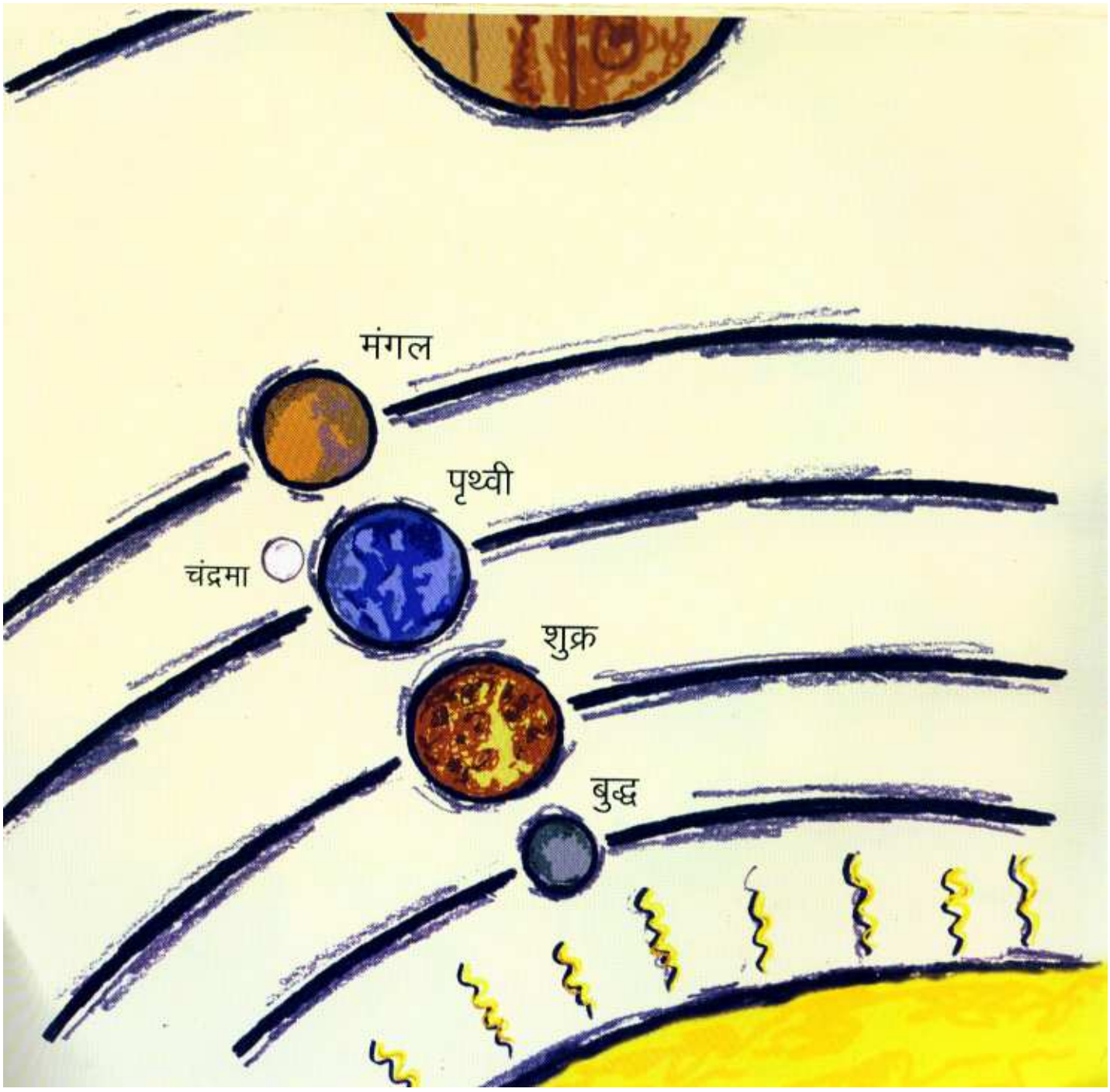
मंगल
पृथ्वी
चंद्रमा
शुक्र
बुद्ध

पर चंदामामा कभी–कभी आपको लड्डू समझ कर
कौन खा जाता है?

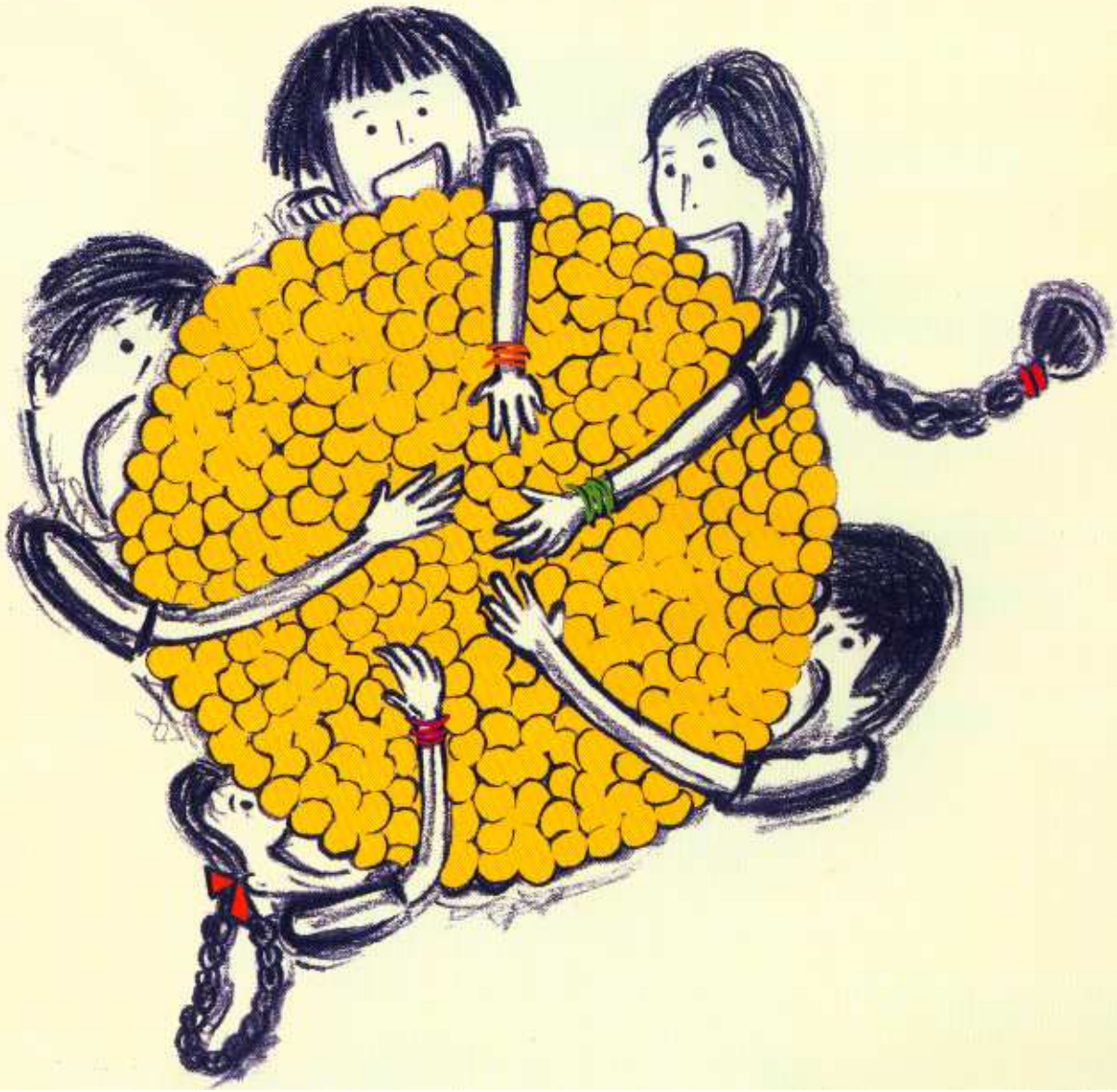

अरे रे रे! ऐसा नहीं है बच्चों। कोई भी मुझे लड्डू की तरह नहीं खाता। मेरे आकार का घटना–बढ़ना मेरी स्थिति के कारण होता है। मेरे जितने हिस्से पर सूरज की रौशनी पड़ती है, बस उतना ही तुम्हें दिखाई देता है। अमावस्या के दिन मैं पृथ्वी के पीछे छिप जाता हूं। तो मुझ पर सूरज की रौशनी नहीं पड़ती। मैं गायब रहता हूं। आज, पूर्णिमा को मेरे पूरे हिस्से पर रौशनी पड़ रही है। इसलिए मैं पूरा दिखाई दे रहा हूं।

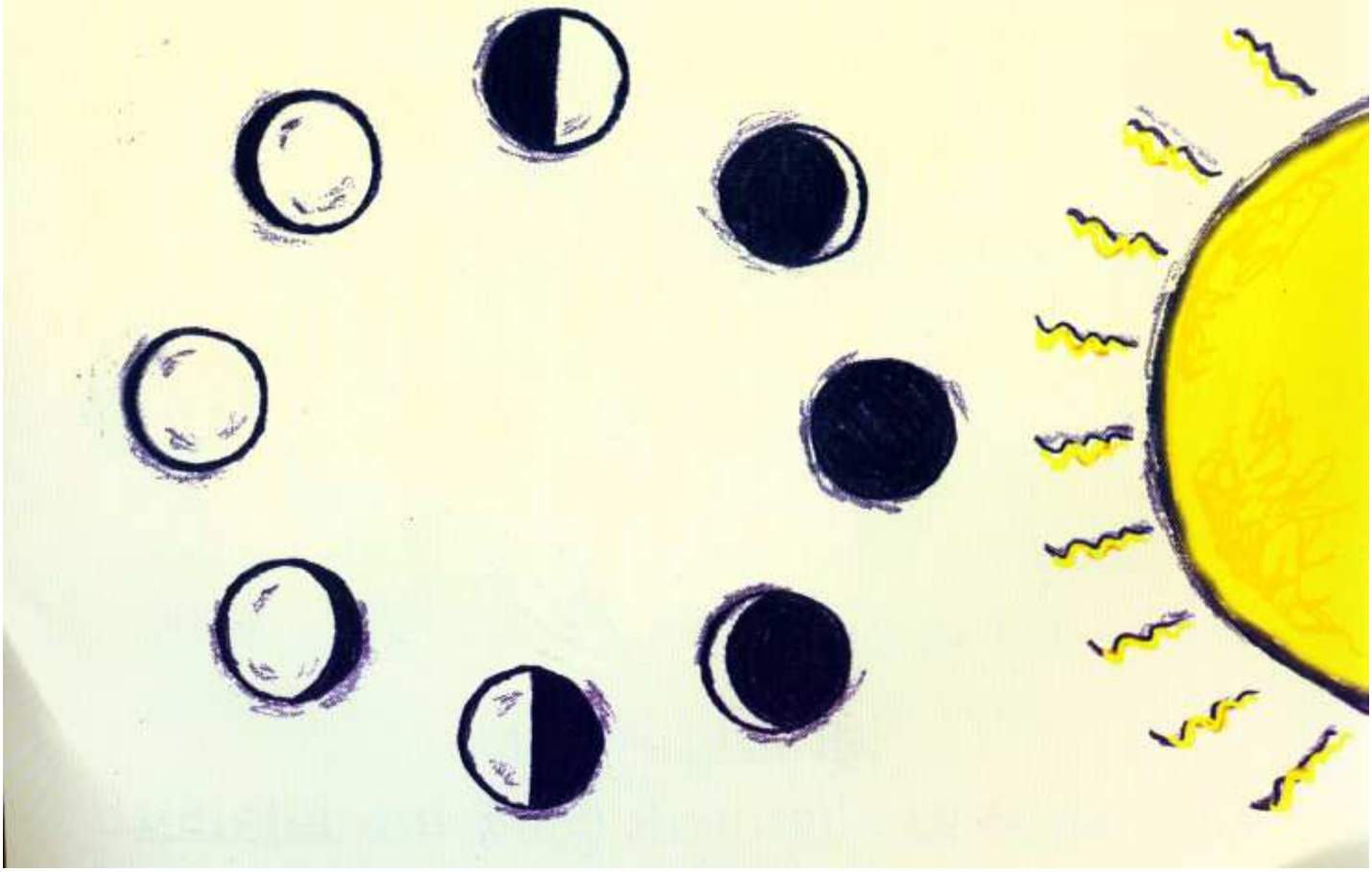

चंदामामा क्या हमारी पृथ्वी की तरह आपकी भी अपनी दुनिया है?

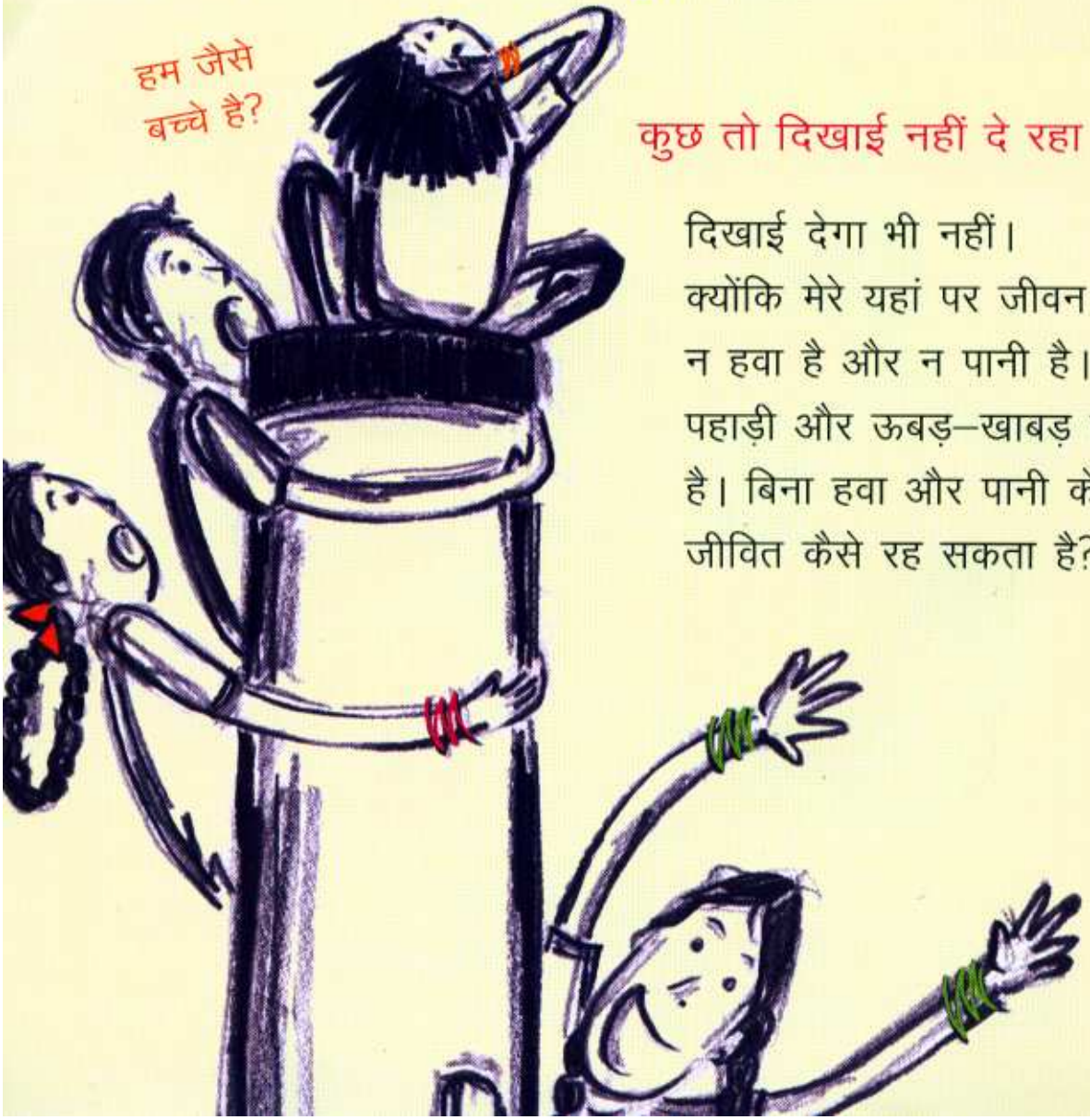

कुछ तो दिखाई नहीं दे रहा

दिखाई देगा भी नहीं।
क्योंकि मेरे यहां पर जीवन नहीं है।
न हवा है और न पानी है। यहां
पहाड़ी और ऊबड़–खाबड़ ज़मीन
है। बिना हवा और पानी के कोई
जीवित कैसे रह सकता है?

माना आपके पास ना हवा ना
पानी है पर आपके पास

सबसे सुंदर प्रकाश देने वाला टॉर्च

तो है ना जो पूरी दुनिया के
रात का अंधेरा दूर करता है।

पृथ्वी का अंधेरा भगाने की कोई भी टॉर्च मेरे पास नहीं है। मैंने बताया ना कि मुझमें तो रौशनी ही नहीं है। मैं तो सूरज की रौशनी से ही चमकता हूं।

चंदामामा
एक बात तो बताइये,
क्या हम पृथ्वी से आपके
पास आ सकते हैं?

क्या किसी लम्बी
जादुई सीढ़ी से
चढ़कर?
क्या
बस से?
ट्रेन से?
या
हवाई
जहाज से?

नहीं बच्चों, मेरे यहां तक पहुंचने के लिए कोई सड़क या रेल लाइन नहीं है। पृथ्वी से तुम्हारे चंदामामा बहुत अधिक दूर है। मेरे यहां तक पहुंचने के लिए तुम्हे अंतरिक्ष से होकर आना पड़ेगा। जिसमें सांस लेने के लिए ऑक्सीजन भी नहीं है। हवाई–जहाज भी केवल हवा में ही उड़ सकते हैं। हवाई–जहाज एक निश्चित ऊंचाई पर पहुंचकर पृथ्वी के समानांतर उड़ते हैं। मनुष्य ने एक ही वाहन का अविष्कार किया है और वह है रॉकेट। जो पृथ्वी के आस–पास उपस्थित हवा को पार करता हुआ अंतरिक्ष में जा सकता है।

क्या यह 'रॉकेट' हमारे दीपावली के पटाखों वाले रॉकेट की तरह है? पर जब हम उसे जलाकर छोड़ते है, तब वह आकाश में फटने के बाद सीधे ज़मीन पर फूस्स... आकर गिर जाता है।

बिल्कुल सही बच्चों! तुम्हारा दीपावली का रॉकेट आकाश में फटने के बाद सीधे धरती पर आकर ही गिरता है। इसका कारण धरती का गुरूत्वाकर्षण बल है।

अरे यह क्या होता है चंदामामा ?
हमने तो इसका नाम कभी नहीं सुना !

अच्छा चलो, अब अपनी गेंद हवा में उछालो
और बताओ क्या होता है ?

मैं करूं मामा !

कुछ ऊपर तक उछलने के बाद गेंद मोहित भईया के सिर पर जाकर गिरी। और फिर वापस आंगन में गिर पड़ी।

पृथ्वी हर वस्तु को अपनी तरफ आकर्षित करती है, इसलिए ऐसा होता है। यही गुरूत्वाकर्षण का बल कहलाता है ।

पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण बल से ही मैं भी बंधा हुआ हूं। इसी से मैं उसके आस–पास चक्कर काटता हूं। मेरे पृथ्वी के दूर–पास आने–जाने से ही समुद्र में ज्वार–भाटा आता हैं।

तुम्हारे चंदामामा एवं अन्य ग्रहों की यात्रा करने के लिए ऐसा खास वाहन बनाया गया जो पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण बल को पार कर अंतरिक्ष में जा सके।

शाबाश बच्चों!

पर चंदामामा यह रॉकेट चलता कैसे है?

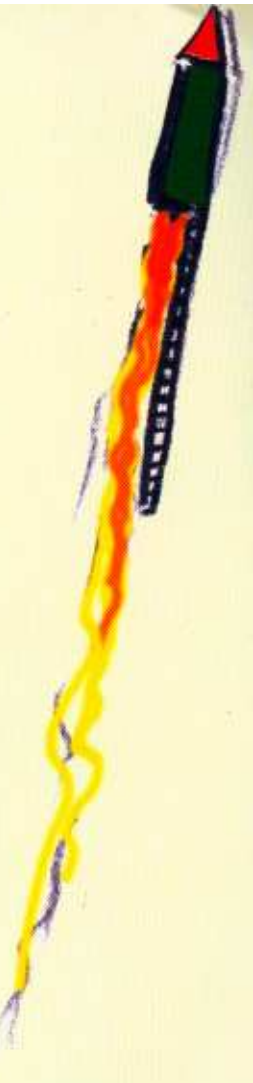

अरे बच्चों ये रॉकेट भी उसी सिद्धांत से चलता है, जिससे कि तुम्हारा दीवाली वाला रॉकेट। दीवाली वाले रॉकेट को ध्यान से देखो। उसमें नीचे की तरफ एक बत्ती होती है, जिस पर बारूद लगी होती है। जब बत्ती में आग लगाते हैं तो रॉकेट ऊपर की तरफ उड़ता है। अब देखो कि आग नीचे की तरफ जा रही है और रॉकेट ऊपर को उठ रहा है। मतलब आग की उल्टी दिशा में । चंदामामा पर आने वाले रॉकेट भी इसी तरह होते हैं।

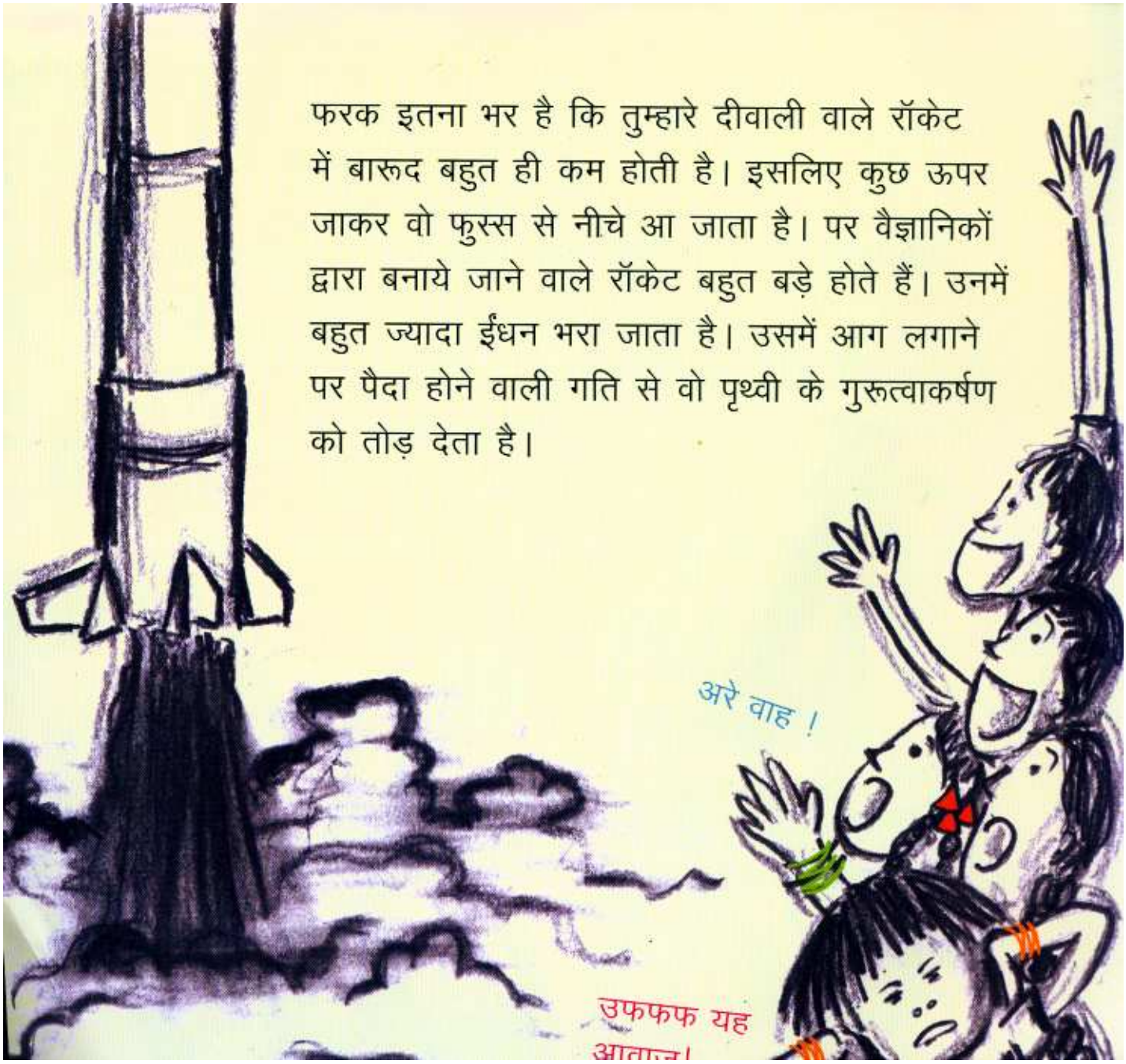
फरक इतना भर है कि तुम्हारे दीवाली वाले रॉकेट में बारूद बहुत ही कम होती है। इसलिए कुछ ऊपर जाकर वो फुस्स से नीचे आ जाता है। पर वैज्ञानिकों द्वारा बनाये जाने वाले रॉकेट बहुत बड़े होते हैं। उनमें बहुत ज्यादा ईंधन भरा जाता है। उसमें आग लगाने पर पैदा होने वाली गति से वो पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण को तोड़ देता है।
अरे वाह !
उफफफ यह

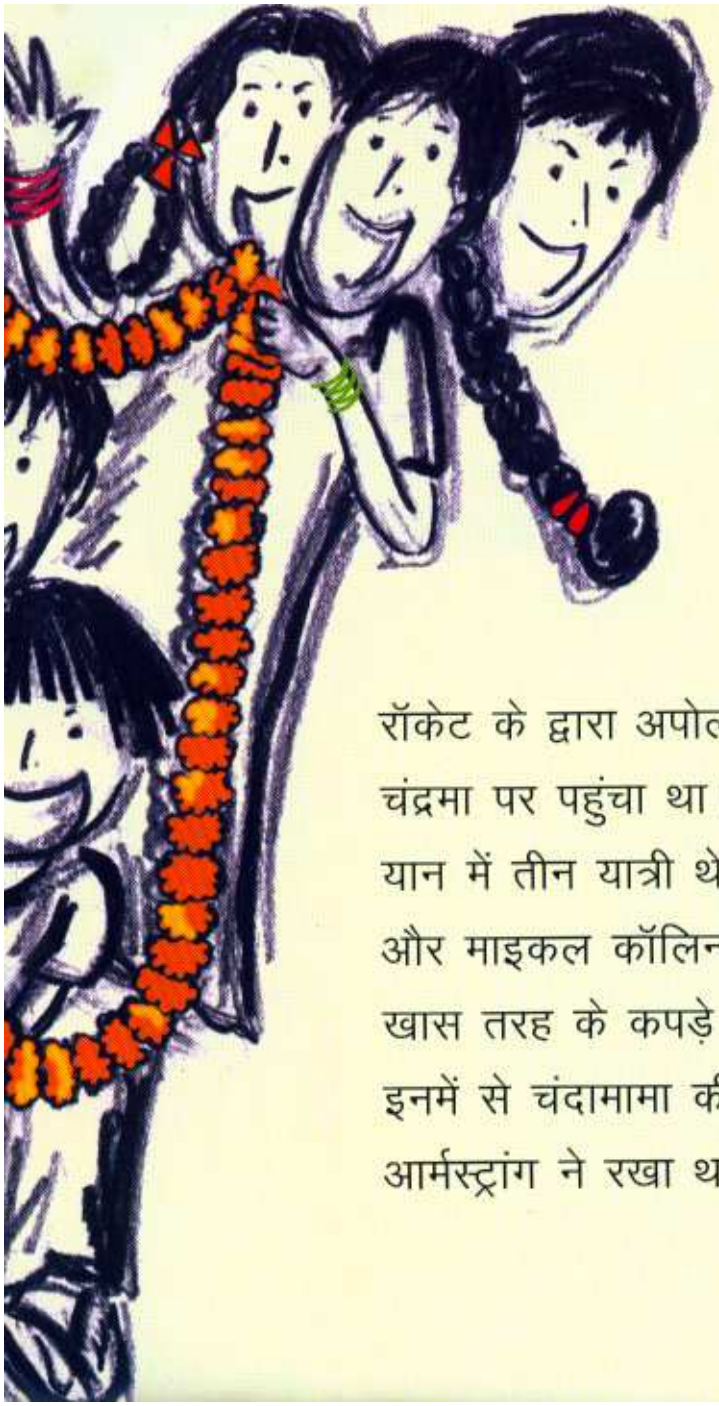

चंदामामा इस रॉकेट से सबसे पहले आपके पास कौन मेहमान आया था?

रॉकेट के द्वारा अपोलो–11 नाम का यान सबसे पहले चंद्रमा पर पहुंचा था। ये 21 जुलाई 1969 की बात है। यान में तीन यात्री थे – नील आर्मस्ट्रांग, एडविन एल्ड्रिन और माइकल कॉलिन्स। चंद्रमा पर आने के लिए उन्हें खास तरह के कपड़े भी पहनने पड़े थे।

इनमें से चंदामामा की सतह पर पहला कदम नील आर्मस्ट्रांग ने रखा था।

पता है बच्चों सबसे पहले तुम्हारे चंदा मामा के घर पर
पहुंचकर उन्होने क्या कहा था?

'ये एक मनुष्य के लिए भले ही एक कदम भर है
पर मानवजाति के लिए ये एक विशाल छलांग है।'

चंदामामा क्या हमारे देश भारत से भी कोई आपके वहां आया है ?

अरे बच्चों! राकेश शर्मा नाम के एक भारतवासी ने अंतरिक्ष की सैर जरुर की है। पर अभी तक कोई भारतवासी तुम्हारे चंदामामा के घर पर नही आया है।

चंदामामा आप देखना हम सब खूब पढ़–लिखकर, बड़े होकर, रॉकेट मे सवार एक दिन आपसे मिलने, आपके घर जरूर आयेंगे। यह वादा है हमारा!

पर तब तक आप हमें भुल तो नहीं जायेंगे ना...

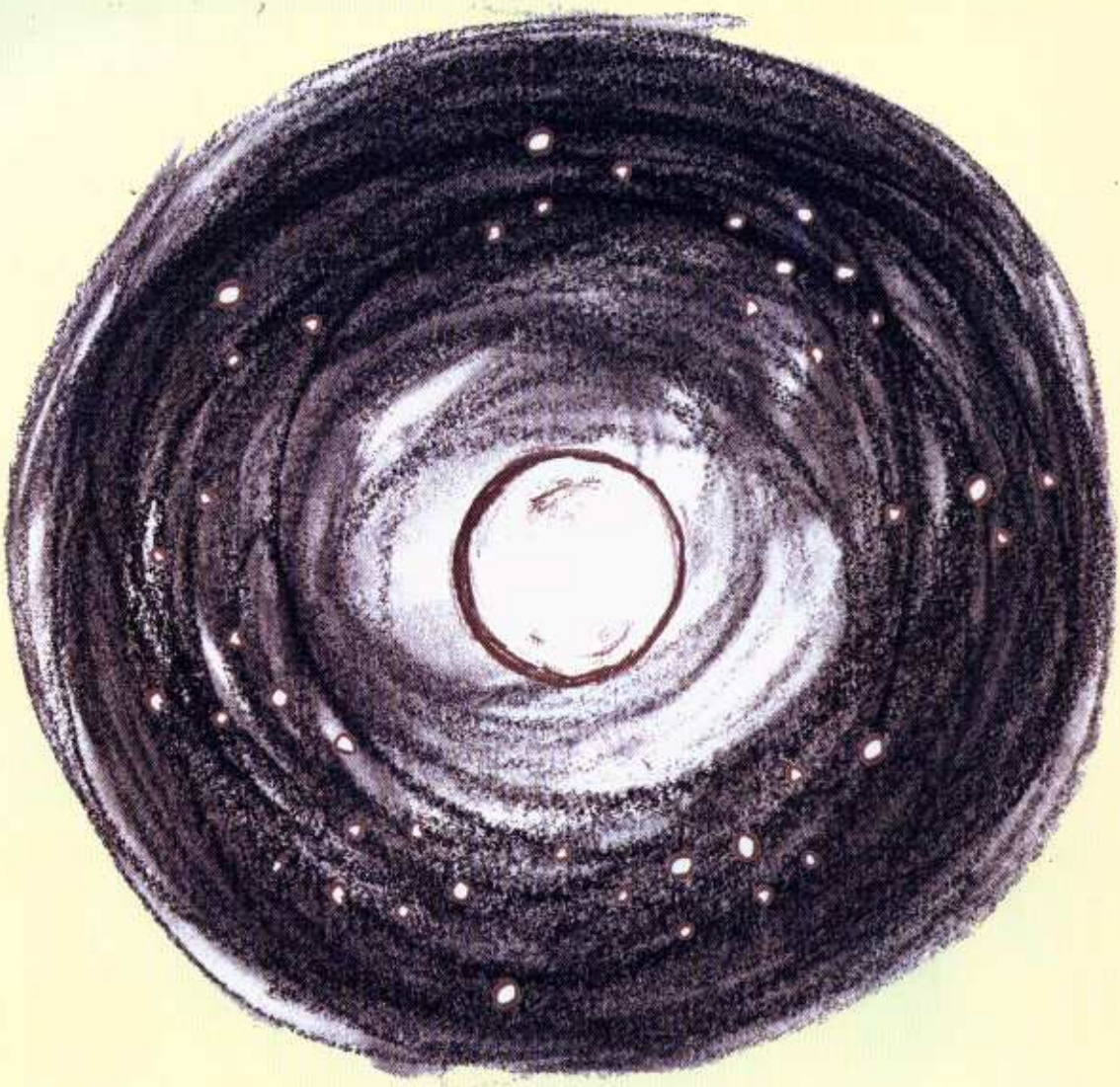

अरे नहीं मेरे प्यारे बच्चों। मैं तुम सब को कैसे भुला सकता हूं ? मैं तुम सभी का इन्तजार करूंगा...

BGVS

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

समाज के विकास में जन विज्ञान आंदोलन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। देश में गरीबी, गैर–बराबरी, अन्याय और अज्ञान को खत्म करने और सहयोग, समानता और न्याय के आधार पर एक लोकतांत्रिक सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में यह आंदोलन लगातार काम कर रहा है। देश में फैली असाक्षरता को दूर करने के लिए इस आंदोलन ने वर्ष 1989 में भारत ज्ञान विज्ञान समिति की स्थापना की। जिसका मुख्य काम जनता को अपनी बदहाली के कारणों को जानने के लिए प्रेरित करना है। जनता की सोच को तार्किक और विज्ञान सम्मत बनाने के लिए विज्ञान का प्रसार करना है। आज भारत ज्ञान विज्ञान समिति की सांगठनिक उपस्थिति देश में 22 प्रदेशों के 400 जिलों और 10,000 से अधिक पंचायतों में है। जहां वो साक्षरता, प्राथमिक शिक्षा, स्त्री सशक्तिकरण, पंचायती राज और स्वास्थ्य जैसे विविध सामाजिक क्षेत्रों में कार्यरत है।

कला जत्थों, संगोष्ठियों, प्रकाशनों, प्रदर्शनियों और अन्य सामाजिक–सांस्कृतिक तरीकों से समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों और भ्रांत धारणाओं को समाप्त करने के लिए संगठन लगातार काम कर रहा है। बच्चों के लिए 'मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा कानून' को लाने एवं लागू करने में भी संगठन का महत्पूर्ण योगदान है।जनवाचन अभियान इसी प्रक्रिया का हिस्सा है। जिसके तहत अब तक 350 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। जिनमें नवसाक्षरों, नवपाठकों के साथ ही बच्चों के लिए श्रेष्ठ और तार्किक साहित्य का प्रकाशन शामिल है। देशी–विदेशी महान लेखकों की प्रसिद्ध रचनाओं के अलावा विभिन्न भाषा के भारतीय लेखकों की रचनाएं भी प्रकाशित की गई है। जिन्हें कम से कम मूल्य में अधिक से अधिक पाठकों को उपलब्ध करवाना इस संगठन का उद्देश्य है। भारत ज्ञान विज्ञान समिति एक गैर मुनाफा वाला संगठन है। श्रेष्ठ साहित्य को जन–जन तक पहुंचाना ही इसका मुख्य मकसद है।

कनिका नायर – पर्ल अकादमी ऑफ फैशन, नई दिल्ली से कम्युनिकेशन डिजाईन की स्नातक उपधि। बच्चों की पुस्तकों के लिए रचनात्मक चित्रांकन और लेखन में गहरी रुचि। जयपुर में रहती हैं।

रोज रात बच्चे आसमान मे चांद को देखते है। उसका आकार घटता – बढ़ता है। उसकी चमक बदलती रहती है। बच्चे उसे चंदा मामा कहते है। उसे लेकर कई कल्पनाएं करते हैं। पर सच्चाई क्या है। आइये मुन्नी, गुन्नू, किशन, मोहित और उसकी छोटी बहन लज्जो के साथ जानने की कोशिश करते है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति